# समण संस्कृति संकाय

## जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19 **1 अ**

## जैन विद्या भाग–1

समय : ½ घण्टा पूर्णांक 30

नामांक अंको में .....

शब्दों में.....

**नोट :– सभी प्रश्नों के अंक समान है। उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।**

**अ, ब, स, द में से सही उत्तर वाले वर्ण को सामने अंकित कोष्ठक ( ) में भरें।**

1. प्रदक्षिण का अर्थ है–
   (अ) वंदामि (ब) मंगल
   (स) चेइंय (द) पयाहिंण ( )
2. आचार्यश्री महाप्रज्ञ का जन्म हुआ–
   (अ) वि.सं. 1977 (ब) वि.सं. 2067
   (स) वि.सं. 1933 (द) वि.सं. 1966 ( )
3. आचार्यश्री महाश्रमण को महाश्रमण पद प्राप्त हुआ–
   (अ) सं. 2046 (ब) सं. 2041
   (स) सं. 2043 (द) सं. 2044 ( )
4. छात्र–प्रतिज्ञा के रचना–कार है–
   (अ) आचार्य भिक्षु (ब) मुनि दुलराज
   (स) मुनि किशनलाल (द) आचार्य तुलसी ( )
5. योग का अर्थ है–
   (अ) निवृत्ति (ब) ब्रह्मचर्य
   (स) प्रवृत्ति (द) अहिंसा ( )
6. शुद्ध आहार–पानी की गवेषणा करना–
   (अ) ईर्या–समिति (ब) अपरिग्रह
   (स) मनोगुप्ति (द) एषणा समिति ( )
7. दो इन्द्रिय वाले जीव है–
   (अ) चींटी (ब) जूं
   (स) कृमि (द) मच्छर ( )
8. निरवद्य का अर्थ है–
   (अ) पाप सहित (ब) पाप रहित
   (स) असत्य (द) अस्तेय ( )

9. दसवें तीर्थंकर है–

(अ) भगवान ऋषभ देव (ब) भगवान महावीर

(स) भगवान मुनि सुव्रत (द) भगवान शीतलनाथ ( )

10. आठवां बोल है–

(अ) जाति पाँच (ब) योग पन्द्रह

(स) शरीर पाँच (द) उपयोग बारह ( )

रिक्त स्थान की पूर्ति करें –

(1) जो.....महाव्रतों की सम्यग् अनुपालना करता है, उन्हें .....कहते हैं।

(2) वंदना करने से मन.....होता है।

(3) प्रत्येक मांगलिक कार्य से पुर्व.....सुनना चाहिए।

(4) नौ गणों के.....गणधर थे।

(5) भगवान महावीर.....वर्ष तक केवली अवस्था में विचरण करते रहें।

(6) पाँचवें तीर्थंकर भगवान.....है।

(7) काय योग के.....भेद है।

(8) पर–निंदा में नहीं पचेंगे.....ही लक्ष्य बनाएँ।

(9) जिसके द्वारा हम छु–कर वस्तु को जानते है.....कहते हैं।

(10) सावद्य का अर्थ है.....सहित कार्य, योग का अर्थ है.....

सही और गलत का चयन (✓) व (✗) का चिन्ह लगावें –

(1) संघ–गान के रचयिता आचार्य महाप्रज्ञ है। ( )

(2) देवंइ का अर्थ है ज्ञानवान्। ( )

(3) नमस्कार महामंत्र के पाँच पद में पैंतीस अक्षर है। ( )

(4) तीसरा बोल काया छह है। ( )

(5) अमर कुमार की माता का नाम रानी चेलना था। ( )

(6) जिस के द्वारा सुना जाता है उसे श्रोत–इन्द्रिय कहते है। ( )

(7) आत्मशुद्धि साधनं धर्मः को धर्म नहीं कहा जाता। ( )

(8) गुरुदेव तुलसी का महाप्रयाण गंगाशहर में हुआ। ( )

(9) जैन धर्म ईष्वर को सृष्टि का कर्ता नहीं मानता। ( )

(10) नवकार वाली में 108 बार जाप किया जाता है। ( )

# समण संस्कृति संकाय

## जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19 **1 ब**

**जैन विद्या भाग–1**

समय : 2½ घण्टा पूर्णांक 70

**नोट – उत्तीर्णांक 100 में से 40 होंगे।**

A. **लघुरात्मक प्रश्न (कोई दस)** 10X3=30

1. तेरह नियमों में से पाँच महाव्रत और तीन गुप्ति के नाम लिखें।
2. वर्तमान में हमारे देव कौन है और उनका स्वरूप क्या है?
3. सामायिक में किन–किन उपकरणों की आवश्यकता होती है?
4. लौकिक मंगल कौन–से है?
5. छात्र–प्रतिज्ञा के प्रथम दो पद लिखें।
6. आचार्य भिक्षु के समय के उल्लेखनीय संतो के नाम लिखें।
7. दसवें आचार्य की घोषणा कब और कहां हुई?
8. सामायिक कितने करण–योग से की जाती है और उसका कालमान कितना है?
9. चतुर्विध तीर्थ का क्या अर्थ है और ग्यारह पंडितों के कितने शिष्य थे?
10. आचार्य श्री महाश्रमण के माता–पिता का क्या नाम था और उनके बचपन का क्या नाम था?
11. नरकगामी और स्वर्गगामी कौन होता है?

B. **निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखें (कोई पांच) –** 5X8=40

1. पाप से डरो नामक कहानी अपने शब्दों में लिखें।
2. भगवान महावीर के साधना–काल एवं कैवल्य–प्राप्ति के बाद का वर्णन करें।
3. परमेष्ठी वंदना का तीसरा ओर पाँचवा पद्य लिखें।
4. मोहनलालजी ने बालक तुलसी के वैराग्य की परीक्षा कैसे ली?
5. आचार्य महाप्रज्ञ की विशेषताओ का उल्लेख करो।
6. सामायिक पाठ को अर्थ सहित लिखो।